SAMVARDHINI
PEER REVIEWED MULTILINGUAL E-RESEARCH JOURNAL
(ISSN ONLINE: - 2583-7176)
https://samvardhini.in
https://www.samskritpromotion.in

SAMVARDHINI :- 01/06/2026
Volume – 8
Issue – 1
(ISSN ONLINE:- 2583-7176)
https://samvardhini.in

वैदिक दृष्टि में भाषा का प्रतीकवाद
(Symbolism of Language in Vedic Perspective)

आशुतोष उपमन

सारांश –

प्रस्तुत शोध-पत्र में वैदिक परम्परा के अंतर्गत भाषा (वाक्) के प्रतीकात्मक स्वरूप का दार्शनिक एवं भाषावैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय में भाषा को संप्रेषण का माध्यम ही नहीं अपितु उसे ब्रह्म की अभिव्यक्ति तथा सृष्टि की आधारभूत शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में ऋग्वेद, उपनिषद् तथा भर्तृहरि के स्फोट सिद्धान्त के आलोक में यह प्रतिपादित किया गया है कि भाषा का स्वरूप बहुस्तरीय, चैतन्यमय तथा प्रतीकात्मक है।

वैदिक वाङ्मय में वर्णित वाक् सूक्त द्वारा भाषा (वाक्) को दैवी, चैतन्यमयी तथा सृष्टि-नियामक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वैदिक दृष्टि में भाषा के प्रतीकात्मक स्वरूप का दार्शनिक, भाषावैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में ऋग्वेद, उपनिषद्, तथा भर्तृहरि कृत वाक्यपदीय के आधार पर यह सिद्ध किया गया है कि भाषा 'शब्द-ब्रह्म' के रूप में समस्त सृष्टि की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

प्रमुख शब्द: – *वाक्, शब्द-ब्रह्म, स्फोट, प्रतीकवाद, वैदिक भाषाविज्ञान, (अपूर्ण)।*

आशुतोष उपमन
शोधच्छात्र शिक्षाशास्त्र विद्या शाखा
केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर
Email: - Upmanashutosh@gmail.com

1. प्रस्तावना (Introduction)

भाषा का सामान्य अर्थ विचारों के आदान-प्रदान का साधन माना जाता है, किन्तु वैदिक दृष्टिकोण में भाषा इससे कहीं अधिक व्यापक एवं दार्शनिक सत्ता है। वैदिक परम्परा भाषा को नित्य, अपौरुषेय तथा चेतन तत्त्व के रूप में स्वीकार करती है अतः भाषा का अध्ययन केवल व्याकरणिक या ध्वन्यात्मक स्तर पर ही नहीं अपितु उसके प्रतीकात्मक एवं आध्यात्मिक आयामों में भी किया जाना आवश्यक है।

भाषा मानव-जीवन का आधारभूत उपकरण है , किन्तु वैदिक परम्परा में यह **अस्तित्व का तत्त्व (Ontological Principle)** है। आधुनिक भाषाविज्ञान जहाँ भाषा को की प्रणाली मानता है, वहीं वैदिक दृष्टि में भाषा **नित्य, अपौरुषेय** तथा **ब्रह्मस्वरूपा** मानी गई है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि वैदिक दृष्टि में भाषा के प्रतीकवादात्मक तत्त्वों का गहन अध्ययन किया जाए।

2. वैदिक वाङ्मय में वाक् का स्वरूप

ऋग्वेद में वाक् को दैवी शक्ति के रूप में निरूपित किया गया है -

"अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमायज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्"॥ [1]

इस मंत्र में वाणी स्वयं को सृष्टि की संचालिका शक्ति के रूप में व्यक्त करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक दृष्टि में भाषा केवल ध्वनि मात्र नहीं है। यह दैवी चेतना का प्रतीक स्वरूप है।

3. शब्द-ब्रह्म की संकल्पना

उपनिषदों में भाषा को ब्रह्म के साथ अभिन्न रूप में जोड़ा गया है -

"वाग् वै ब्रह्म" [2]

यहाँ वाणी को ब्रह्मस्वरूप माना गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि शब्द केवल अर्थ का वाहक न होकर परम सत्य का प्रतीक है। भारतीय दर्शन में 'शब्द' को नित्य, सर्वव्यापक तथा चेतन माना गया है। यह सिद्धान्त "शब्द-ब्रह्म" के नाम से प्रसिद्ध है।

4. ओम् की प्रतीकात्मकता/ओंकारः - परम भाषिक प्रतीक

माण्डूक्य उपनिषद् में ओम् को समस्त सृष्टि का प्रतीक बताया गया है -

"ॐ इत्येतदक्षरमिदं सर्वम्" [3]

यह मंत्र स्पष्ट करता है कि ओम् ध्वनि मात्र न होकर सम्पूर्ण अस्तित्व का सार्वभौमिक प्रतीक है।

---

[1] (ऋग्वेद १०.१२५.३)
[2] (तैत्तिरीय उपनिषद्)
[3] (माण्डूक्य उपनिषद्)

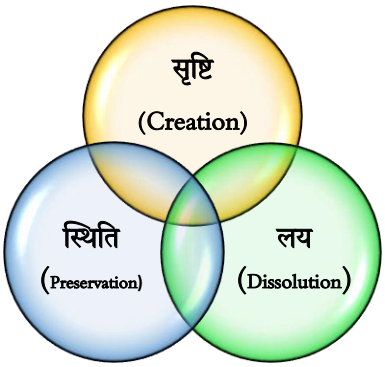

इन तीनों तत्त्वों का दार्शनिक प्रतीक स्वरूप है।

भारतीय शास्त्रों में हमें यह श्लोक भी प्राप्त होता है –

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव **ओंकाराय** नमो नमः॥

5. स्फोट सिद्धान्त

महान् व्याकरणाचार्य **भर्तृहरि** (5वीं शती) 'वाक्यपदीय' ग्रन्थ में प्रतिपादित करते है कि भाषा का वास्तविक स्वरूप ध्वनि नहीं है अपितु वह अर्थ का आंतरिक विस्फुरण है -

"शब्दो नित्यः"

- इस सिद्धान्त के अनुसार भाषा चेतना का प्रतीक है, जो ध्वनि के माध्यम से प्रकट होती है।
- ध्वनि (sound) क्षणिक है।
- किन्तु 'स्फोट' नित्य है।

अतः भाषा का वास्तविक स्वरूप बाह्य ध्वनि न होकर, **आन्तरिक चेतन-विस्फुरण** है।

6. वाक् के चार स्तर

ऋग्वेद में वाणी के चार स्तरों का उल्लेख मिलता है -

'चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वचो मनुष्या वदन्ति॥[4]

परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी आदि चार विभाग बनाये है। -

ऋचो यजूंषि सामानि चतुर्थी व्यवहारिकी।[5]

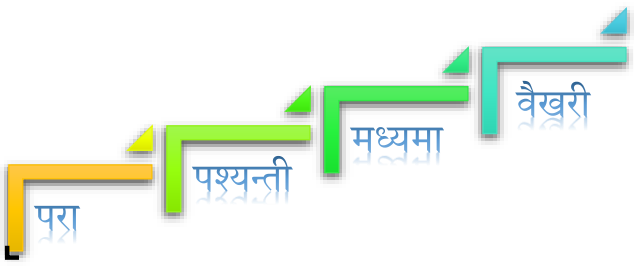

इन चार स्तरों का विवरण -

१. परा - शब्दब्रह्मरूपा।

[4] (ऋग्वेदः, १.१६४.४५)

[5] निरुक्त (१३/९)

२. पश्यन्ती – मनोगोचरीभूता।

३. मध्यमा – बुद्धिनिर्ग्राह्या।

४. वैखरी – सकलजनश्रोत्रमात्रग्राह्यो।

यह विभाजन भाषा की प्रतीकात्मक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

१. परा वाक् - ब्रह्मरूपेण अव्यक्ता, परम सूक्ष्मा।

परा वाक् भाषा की **आद्य, सूक्ष्म और चेतनात्मक अवस्था** है। यह प्रतीक बनने से पहले की स्थिति है। **भर्तृहरि** "स्फोट सिद्धान्त" में कहते है - भाषा का वास्तविक रूप **अखंड** है। शब्द और अर्थ अलग नहीं है। यह अखंडता ही **परा वाक्** है।

परा वाक् वाणी का सबसे सूक्ष्म और मूल रूप है। **परा वाक्** को ब्रह्म की शक्ति माना गया है। "वाग्वै ब्रह्म" (वाणी ही ब्रह्म है)। यह **अव्यक्त** अवस्था में रहती है। इसका निवास **मूलाधार या चेतना के गूढ़ स्तर** में माना गया है। यहाँ शब्द और अर्थ में कोई भेद नहीं होता (अद्वैत अवस्था) में स्थित माना गया है।

मनोवैज्ञानिक रूप से यह **अवचेतन विचार का स्रोत** है। शास्त्रों में इसे **ब्रह्म की शक्ति** माना गया है। **काश्मीर शैव दर्शन** में परा वाक् **शिव की शक्ति (शक्ति तत्त्व)** माना गया है। यह सृष्टि की प्रथम अभिव्यक्ति है। सम्पूर्ण जगत् उसी का विस्तार है। परा वाक् भाषा की **प्रतीकात्मक शक्ति** का मूल स्रोत है। यहाँ **शब्द और अर्थ** एकरूप होते है। कोई ध्वनि या लिपि नहीं होती, केवल **भाव और चेतना** होती है। यही अवस्था बाद में प्रतीकों (शब्दों) में परिवर्तित होती है।

२. पश्यन्ती वाक् - भावरूपेण दृश्यते, चिन्तन-स्तर।

यह वाणी का सूक्ष्म लेकिन परा से थोड़ा व्यक्त स्तर है यहाँ **शब्द और अर्थ** अभी अलग नहीं हुए है परंतु **ज्ञान 'दृश्य'** के रूप में प्रकट होने लगता है। इसे "**भाव का दर्शन**" कहा जाता। कि जहाँ **परा वाक्** में केवल चेतना थी, वहीं **पश्यन्ती वाक्** में वह चेतना "**चित्र/विचार**" के रूप में दिखाई देती है।

पश्यन्ती वाक् भाषा के **प्रतीक बनने** की **प्रारंभिक अवस्था** है यहाँ **अर्थ** का **मानसिक चित्र** बनता है। अभी शब्द नहीं बना लेकिन **अर्थ को देखा जा सकता है।** यही अवस्था आगे चलकर शब्दों में बदलती है।

भर्तृहरि के अनुसार - भाषा का मूल रूप **अखंड स्फोट** है। पश्यन्ती अवस्था में यह स्फोट ज्ञान के रूप में दृष्टिगोचर होता है यहाँ अभी विभाजन (शब्द–अर्थ) प्रारंभ नहीं हुआ है।

काश्मीर शैव दर्शन में पश्यन्ती वाक् **इच्छा शक्ति** का प्रारंभिक प्रकट रूप होता है यहाँ सृष्टि दिखने लगती है। यह **शिव-शक्ति के संकल्प** का पहला दृश्य रूप होता है। **पश्यन्ती वाक्** भाषा की **दृश्य-अवधारणा अवस्था है।** यह प्रतीक बनने से पहले **अर्थ के 'देखे जाने' का स्तर** है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह का चरण है। शास्त्रों में यह **परा और मध्यमा के बीच का सेतु** है।

३. मध्यमा वाक् - मध्यमानादोऽर्थवाचक:[6]

यह मानसिक वाणी है। यहाँ **शब्द और अर्थ** का भेद प्रारम्भ हो जाता है। विचार अब **भाषिक संरचना** लेने लगते है। ध्वनि (sound) अभी उत्पन्न नहीं होती, पर शब्द "मन में" स्पष्ट हो जाते है।

मध्यमा वाक् भाषा की **प्रतीकात्मक संरचना का निर्माण-स्थल** है यहाँ **अर्थशब्द** में परिवर्तित होता है। व्याकरण, वाक्य-रचना, शब्द-चयन आदि यहीं निर्धारित होते हैं। प्रतीक अब स्पष्ट रूप में परिवर्तित होते हैं, पर ध्वनि नहीं

[6] परमलाघुमंजूषा

बनते हैं। **भर्तृहरि** के अनुसार भाषा का मूल **स्फोट (अखंड अर्थ)** है। मध्यमा में वही स्फोट विभक्त होकर शब्द-रूप ग्रहण करता है यहाँ **शब्द-अर्थ** भेद स्पष्ट होने लगता है।

काश्मीर शैव दर्शन के अनुसार मध्यमा **ज्ञान शक्ति** का स्तर है। यहाँ चेतना स्वयं को विचार और भाषा के रूप में व्यवस्थित करती है। यह सृष्टि के बौद्धिक विन्यास) का चरण है। मध्यमा वाक् मन में बनने वाली आंतरिक भाषा है। यह प्रतीकात्मक रूप से शब्द-निर्माण और वाक्य-रचना का स्तर है।

मनोवैज्ञानिक रूप से यह और का चरण है। शास्त्रों में यह पश्यन्ती (भाव) और वैखरी (उच्चारण) के बीच का सेतु है।

४. वैखरी वाक् - परश्रवणगोचर:[7] **,** उच्चरित शब्द

यह वाणी का **स्थूल और बाह्य रूप** है। यहाँ **ध्वनि, अक्षर, शब्द, वाक्य** स्पष्ट रूप में सुनाई देते है। यह **वाणी का संप्रेषणीय** स्तर है। शरीर के अंग **कंठ, जिह्वा, तालु, ओष्ठ** सक्रिय होते हैं। वैखरी वाक् भाषा की **पूर्ण प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति** है। यहाँ **शब्द** ध्वनि के रूप में प्रकट होते हैं। अर्थ अब **सामाजिक संप्रेषण** में प्रवेश करता है। भाषा के सभी प्रतीक **ध्वनि, लिपि, व्याकरण** यहाँ सक्रिय होते हैं।

भर्तृहरि के अनुसार वास्तविक भाषा (स्फोट) सूक्ष्म है पर वैखरी में वह **खंडित** रूप में प्रकट होती है। यहाँ शब्द अलग-अलग सुनाई देते हैं, जबकि मूल अर्थ अखंड रहता है।

काश्मीर शैव दर्शन में वैखरी **क्रिया शक्ति** का स्तर है। यह चेतना की **बाह्य क्रिया** है। सम्पूर्ण जगत् की अभिव्यक्ति इसी स्तर पर अनुभव होती है। **वैखरी वाक्** वाणी का **उच्चरित, श्रव्य और स्थूल रूप** है। यह प्रतीकात्मक रूप से भाषा की पूर्ण अभिव्यक्ति है।

मनोवैज्ञानिक रूप से यह और का चरण है। आधुनिक मनोविज्ञान में वैखरी वाक् निम्न में समाहित है - (वाणी उत्पादन) (उच्चारण प्रक्रिया), Motor Execution (शारीरिक क्रिया) शास्त्रों में यह वाणी की अंतिम अभिव्यक्ति (final manifestation) मानी गई है।

एवं भाषा केवल वैखरी नहीं किन्तु **चेतना की बहुस्तरीय प्रतीक-प्रक्रिया** स्पष्ट विदित होती है।

7. वैदिक एवं आधुनिक भाषाविज्ञान का तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	वैदिक दृष्टि	आधुनिक दृष्टि
भाषा का स्वरूप	दैवी एवं नित्य	सामाजिक एवं परंपरागत
प्रतीक का स्वरूप	अंतर्निहित एवं वास्तविक	Arbitrary sign
शब्द का अर्थ	स्वाभाविक	परंपरागत (conventional)
ध्वनि	शक्ति-स्वरूपा	भौतिक तरंग

अतः स्पष्टता की दृष्टि में वैदिक भाषाविज्ञान अधिक **दार्शनिक एवं आध्यात्मिक** है।

[7] परमलाघुमंजूषा

8.भाषा का प्रतीकात्मक आयाम

वैदिक दृष्टि में भाषा के प्रतीकत्व को निम्न प्रकार से बोधित किया जा सकता है –

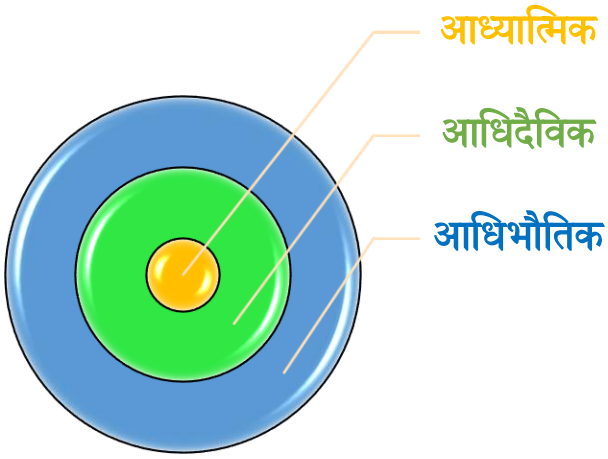

1. **अधिभौतिक (Physical)** – ध्वनि, उच्चारण
2. **अधिदैविक (Cosmic)** – देवता-शक्ति
3. **अध्यात्मिक (Spiritual)** – ब्रह्म-साक्षात्कार

अतः भाषा त्रिस्तरीय प्रतीक है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक दृष्टि में भाषा का स्वरूप अत्यंत व्यापक एवं गूढ़ है। भाषा को केवल संप्रेषण का साधन न मानकर, उसे ब्रह्म की अभिव्यक्ति, चेतना का माध्यम तथा सृष्टि की आधारशक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः भाषा का प्रतीकवाद वैदिक दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो आधुनिक भाषाविज्ञान से भिन्न एवं अधिक गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि- भाषा वैदिक परम्परा में केवल संकेत-तंत्र (sign system) नहीं है। अपि तु **सृष्टि-शक्ति** है। 'शब्द' ब्रह्म का प्रतीक है, 'वाक्' चेतना की अभिव्यक्ति है। 'ॐ' सम्पूर्ण अस्तित्व का सार्वभौम प्रतीक है।

अतः वैदिक दृष्टि में भाषा का प्रतीक ब्रह्म के सदृश है तथा वास्तविक तत्त्व-मीमांसा का भाषाई प्रकटन है।

संदर्भ (References)

1. ऋग्वेद, (विभिन्न संस्करण), ***ऋग्वेद संहिता (सायण भाष्य सहित),*** चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
2. जोशी, एम., ***वेदों में वाक् और चेतना का संबंध*** (पीएच.डी.), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (2021)।
3. कात्यायन, ***वार्तिक (पाणिनीय परंपरा),*** चौखम्भा संस्कृत सीरीज,वाराणसी (2002)।
4. कपूर,कपिल, ***Language, Linguistics and Literature: The Indian Perspective,*** अकादमिक प्रेस, नई दिल्ली (1994)।
5. छान्दोग्य उपनिषद्. (सं.), ***छान्दोग्य उपनिषद्***, गीता प्रेस,गोरखपुर।
6. वर्मा, डी., ***वैदिक वाक् सिद्धान्त का भाषावैज्ञानिक अध्ययन*** (पीएच.डी. शोध-प्रबंध), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (2017)।
7. ***तैत्तिरीय आरण्यक***, चौखम्भा संस्कृत संस्थान,वाराणसी।
8. पाणिनि,***अष्टाध्यायी***, मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली (2005)।
9. पतंजलि,***महाभाष्य***, चौखम्भा संस्कृत सीरीज,वाराणसी (1998)।
10. बृहदारण्यक उपनिषद्, ***बृहदारण्यक उपनिषद् (शांकर भाष्य सहित),*** गीता प्रेस, वाराणसी।
11. भर्तृहरि, ***वाक्यपदीय (सं. एवं व्याख्या***), चौखम्भा संस्कृत सीरीज,वाराणसी (2000)।
12. वर्मा, सत्यकाम, ***भारतीय भाषाविज्ञान***, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली (2010)।

ऑनलाइन स्रोत

1. Sanskrit Documents, ***वैदिक ग्रंथों का डिजिटल संग्रह,*** (apUrNa) (2023)।
2. Internet Archive, ***प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का संग्रह***, https://archive.org (2023)।